उस्तरा

हुल्लड़ मुरादाबादी

मुस्कुराने के लिए

मसखरा मशहूर है आंसू बहाने के लिए,
बांटता है वो हंसी सारे जमाने के लिए।
घाव सबको मत दिखाओ लोग छिड़केंगे नमक,
आएगा कोई नहीं मरहम लगाने के लिए।
देखकर तेरी तरक्की खुश नहीं होगा कोई,
लोग मौका ढूंढते हैं काट खाने के लिए।
फलसफा कोई नहीं है और न मकसद कोई,
लोग कुछ आते जहां में हिनहिनाने के लिए।
मिल रहा था भीख में सिक्का मुझे सम्मान का,
मैं नहीं तैयार झुककर उठाने के लिए।
जिंदगी में गम बहुत हैं हर कदम पर हादसे रेज,
कुछ समय तो निकालो मुस्कुराने के लिए।

चूरण

ए खुदा, हिचकियों में कुछ तो फर्क करता,
अब कैसे पता करूं, कौन-सी
वाली याद कर रही है!

लड़की : मैं शादी के बाद तुम्हारे सारे
दुख-दर्द बांट लूंगी!
लड़का : पर मैं दुखी कहां हूं?
लड़की : मैं शादी के बाद की
बात कर रही हूं!

पति को ताने देते हुए उसकी पत्नी बोली,
"तुम्हारी भी कोई जिंदगी है?
मकान मेरे पिता जी का है,
मेरी बहन के भेजे हुए कपड़े पहनते हो,
घर का राशन मेरी चाची भिजवाती है
और बच्चों का पालन-पोषण
मैं नौकरी करके करती हूं,
शर्म नहीं आती तुम्हें?"
पति बोला,
"शर्म तो तुम्हारी भाई को आनी चाहिए,
वह इसी शहर में रहता है,
फिर भी कुछ मदद नहीं करता!"

एक आंदोलनजीवी शर्ट भी किसी कंपनी ने निकाल रखी है कि कुछ लोग बार-बार बेवजह आंदोलन पर उतारू हो जाते हैं। शर्टों में लगता है कि इस समय सबसे ज्यादा इनोवेशन हो रहा है। समय की मांग भी यही है।

एक शर्ट में सभी समस्याओं का समाधान

जब मोबाइल पर एक कंपनी की फियरलेस शर्ट का एसएमएस देखा तो अपन फियरफुल हो गए कि आखिर यह कैसी शर्ट होगी, जिसके पहनते ही पहनने वाला निर्भय हो जाएगा। इस फियरलेस शर्ट के शॉर्ट मैसेज ने दिमाग को लार्ज सोच की ओर मोड़ दिया। काफी दिनों तक हम सबने ईमानदार शर्ट का विज्ञापन सिद्दत से झेला है। एक समय जूते भी बकौल विज्ञापन सांस लिया करते थे। गंगाधर तो समझ रहा था कि फियरलेस शर्ट वह होगी, जिसको पहनकर एक व्यक्ति मवालियों से मुकाबला कर लेगा। एक शर्ट के दाग-धब्बे ऐसे हो गए कि इनसे आदमी भयाक्रांत हो मुक्ति चाहता है। यहां तो ऐसे-ऐसे दागदार लोग हैं कि उनकी करतूतों के आगे तो शर्म भी शर्म से भाग खड़ी हो।

सुदर्शन सोनी

कैजुअल शर्ट सुनी थी। पार्टी शर्ट सुनी थी। बुशशर्ट भी एक समय खूब चला करती थी। पहले की शर्ट में पॉकेट में टेलर मास्टर का नाम टंकित रहता था। रेडीमेड के युग ने टेलरिंग को एक तरह से फेलिंग बना दिया। फियरलेस शर्ट है तो फिर फियरफुल शर्ट भी आ जानी चाहिए, जो दुराचारियों को पहना दी जाए तो वे कुकर्म करने से पहले डरें।

गंगाधर बाजार की इस बाजीगरी का कायल हो गया है। वह शर्ट जैसी निर्जीव वस्तु को सजीव के गुणों के तड़के लगाकर बेच रहा है। बाजार से तो यही विनती है कि भाई, एक रोजगार शर्ट निकाल दे कि बस पहनते ही नौकरी पक्की। लो रोजगार की समस्या दूर। एक गरीबी उन्मूलन शर्ट की भी महती आवश्यकता है, जिसको पहनने भर से गरीबी दूर हो जाए। एक मन परिवर्तन करने वाली शर्ट हो कि बड़े-बड़े अमीर पहन लें। किसी दिन तो ऐसा मन बदले कि सबसे बड़े परोपकारी बन जाएं। लीजिए हमारी आधी दौलत का दान गरीबी, अभाव, भुखमरी दूर करने और उत्तम शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं पास लाने के लिए! एक लव शर्ट भी क्यों न हो, जिसे पहनते ही रोमांस और प्रेम की भावनाएं जोर मारने लगें। दांपत्य शर्ट भी हो एक कि उसके पहनने भर से पति-पत्नी में बिगड़ी बात बनने लगे और बनी बात कभी न बिगड़े। हमारे समय की सबसे बड़ी समस्या महंगाई है, तो ऐसी शर्ट कोई कंपनी क्यों नहीं पेश करती, जिसे पहनने से महंगाई का भान ही न हो। बाजार की महबूबा है महंगाई। वह तो क्रेडिट और फलेक्सी ईएमआई पर माल बेचकर ब्याज तथा दंड ब्याज वसूल ग्राहक की बची लंगोटी भी उतरवा सकती है।

लगता है कि एक आंदोलनजीवी शर्ट भी किसी कंपनी ने निकाल रखी है कि कुछ लोग बार-बार बेवजह आंदोलन पर उतारू हो जाते हैं। शर्टों में लगता है कि इस समय सबसे ज्यादा इनोवेशन हो रहा है। समय की मांग भी यही है। देश में सैकड़ों ऐसी समस्याएं दशकों से जड़ें जमाए हैं। दूर होना तो दूर, ये और बढ़ती जा रही हैं। जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाई-भतीजावाद, रिश्वतखोरी, मुनाफाखोरी, जमाखोरी, मिलावट, पेपर लीक, इन सबके लिए बस एक-एक अदद शर्ट आ जाए तो देश का कितना भला हो जाएगा। आखिर में गंगाधर चाहता है कि एक शर्ट चाहे तो कुर्ता देश के नेताओं के लिए भी होना चाहिए कि उसको पहनकर वे झूठे आश्वासन न दें, सही-सही बात करें, सही वादे निभाएं। जनता को बरगलाएं नहीं। तुष्टिकरण न करें। पर इससे तो चुनाव जीतना मुश्किल हो जाएगा, तो फिर? जनता शर्ट ही एक बन जाए, जिसे पहनने पर जनता को बरगलाना संभव ही न हो। पांच साल में एक बार नहीं, यह शर्ट बार-बार जनता के पास जाने को मजबूर कर दे।

बात-बेबात

वायदा-संस्कृति के युग में

वायदा-संस्कृति ही मात्र ऐसी संस्कृति है, जिसमें मनुष्य के पल्ले से कुछ जाता नहीं, पर रंग हमेशा चोखा आता है।

"इस बार राजा बेटा होली पर हम तुम्हें ऐसा बढ़िया सूट बनाकर देंगे, ऐसा बढ़िया कि जिसे देखकर तुम्हारी आंखें चकाचौंध हो जाएंगी।" हमने अपने इकलौते हंसराज की पीठ थपथपाते हुए उसे पूरे आत्मविश्वास के साथ वचन दिया। हमने देखा, राजा बेटा की आंखों में भरोसे की एक अजीब-सी चमक आ गई है और वह बेचारा कल्पना में अपने आपको नए-नए सूट में सजा-बना देखकर साथियों पर रौब जमा रहा है। हमारी बात सुनी तो राजा बेटा खुश होकर बोला, "क्यों पापा, सूट ही सूट या बूट भी?"

गिरिराज शरण अग्रवाल

हमने देखा, उसकी हवाई चप्पल की पट्टी अंगूठे और उंगली के बीच वाले सुराख से बाहर आने का प्रयास कर रही है। हमने झट से वायदा कर लिया कि सूट ही नहीं, एक बढ़िया-सा बूट भी। पिछले पचास वर्षों में हम कम-से-कम इतना तो सीख ही गए हैं कि वायदा-संस्कृति क्या होती है। सच बताएं तो हमें यह कहने में कोई झिझक नहीं है कि संसार में अब तक जितनी भी संस्कृतियां प्रचलित हुई हैं, उनमें सबसे बढ़िया वायदा-संस्कृति ही है और इन दिनों हमारे देश में इसका बोलबाला है। जनता इस वायदा-संस्कृति को लेकर शान के साथ जीती है और खून के आंसू पीती है।

मुगालता खाने-खिलाने के मामले में बस इतना देख लेना काफी है कि इसे खिलाने और खाने वाले अपनी कला में कितने दक्ष हैं।

इधर-उधर से

वायदा-संस्कृति ही एकमात्र ऐसी संस्कृति है, जिसमें मनुष्य के पल्ले से तो कुछ जाता नहीं, पर रंग हमेशा चोखा आता है। हम चूंकि पिछले पचास वर्षों के दौरान इस संस्कृति में पूरी तरह रच-बस गए थे और इसके गुणों से भली प्रकार परिचित हो चुके थे, इसलिए हमने न तो अपनी जेब देखने का कष्ट किया और न पर्स देखने का, झटपट राजा बेटा से वायदा कर लिया नए सूट के साथ नए बूट का भी। राजा बेटा अब कोई नादान बच्चा तो रहा नहीं है, जूनियर हाईस्कूल का विद्यार्थी है, लेकिन जैसा कि आप जानते हैं कि वायदा-संस्कृति में तो अच्छे-अच्छे सयाने मुगालता खा जाते हैं। ('मेरे इक्यावन व्यंग्य' से)

आड़े-तिरछे

रेखांकन : इरफान पांडेय

JobAlert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

भारतीय रेलवे ने जारी किया विज्ञापन

अप्रेंटिसशिप के लिए योग्य अभ्यर्थी करें आवेदन

550 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 09 अप्रैल, 2024
पात्रताएं : 10वीं, 12वीं व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : **https://rcf.indianrailways.gov.in**

बिहार लोक सेवा आयोग में रिक्तियां ■ 62 पद

माध्यमिक शिक्षक व उच्च माध्यमिक शिक्षक के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि
16 मई, 2024
पात्रताएं
पोस्ट-ग्रेजुएशन, बीएड व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
www.bpsc.bih.nic.in

EDCIL में रोजगार के अवसर ■ 50 पद

टीजीटी व पीजीटी टीचर ट्रेनर के कई पदों पर मौके
आवेदन की अंतिम तिथि
20 अप्रैल, 2024
पात्रताएं
पोस्ट-ग्रेजुएशन, बीएड व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
edciteacherrecruitment.com.

NLC इंडिया लिमिटेड में भर्ती ■ 239 पद

इंडस्ट्रियल ट्रेनी के विभिन्न पदों पर रिक्तियां
आवेदन की अंतिम तिथि : 19 अप्रैल, 2024
पात्रताएं : मैट्रिक, आईटीआई व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : **https://www.nlcindia.in**

IIT मद्रास में रोजगार के अवसर ■ 41 पद

जूनियर टेक्नीशियन व सुपिरंटेंडिंग इंजीनियर के पद पर भर्ती
आवेदन की अंतिम तिथि
02 अप्रैल, 2024
पात्रताएं
ग्रेजुएशन, इंजीनियरिंग व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
https://recruit.iitm.ac.in

संघ लोक सेवा आयोग ■ 28 पद

एंथ्रोपोलॉजिस्ट, रिसर्च ऑफिसर व अन्य पद रिक्त
आवेदन की अंतिम तिथि
28 मार्च, 2024
पात्रताएं
पोस्ट-ग्रेजुएशन, बीटेक व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
https://upsc.gov.in

योग्य अभ्यर्थी करें आवेदन ....

- **भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण :** लेखा अधिकारी के पदों पर रिक्तियां।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 15 अप्रैल, 2024 तक आवेदन करें ■ **www.iwai.nic.in**
- **कर्मचारी भविष्य निधि संगठन :** उपनिदेशक व सहायक निदेशक के पद पर आवेदन आमंत्रित।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 15 अप्रैल, 2024 तक आवेदन करें ■ **www.epfindia.gov.in**

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें **udaan@amarujala.com** पर ई-मेल करें।

SCHOLARSHIP ALERT

छात्रों के लिए स्कॉलरशिप पाने का अवसर

यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन (यूसीएल), ब्रिटिश काउंसिल और ग्रेट ब्रिटेन कैंपेन के सहयोग से भारत समेत बांग्लादेश, मलेशिया और नाइजीरिया के छात्रों के लिए विदेश में स्नातकोत्तर का अध्ययन करने के लिए यूसीएल-ग्रेट स्कॉलरशिप-2024 की शुरुआत की गई है। इस स्कॉलरशिप प्रोग्राम के लिए वे छात्र आवेदन के पात्र हैं, जिन्होंने यूसीएल में पूर्णकालिक स्नातकोत्तर डिग्री में अध्ययन करने के लिए आवेदन किया हो। यूसीएल-ग्रेट स्कॉलरशिप के तहत छात्रों का चयन अच्छे शैक्षणिक रिकॉर्ड और वित्तीय आवश्यकता के आधार पर किया जाएगा। आवेदकों के पास प्रमाण-पत्र व अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए। यूसीएल-ग्रेट स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित छात्रों को 10,000 पाउंड की स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। यूसीएल-ग्रेट स्कॉलरशिप के तहत मिलने वाली इस स्कॉलरशिप के लिए आवेदक ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।
आवेदन की अंतिम तिथि : 07 मई, 2024
आवेदन लिंक : https://tinyurl.com/2ceraew6

विदेश में पढ़ने वाले छात्रों के लिए छात्रवृत्ति

यूनीक्रेड्स की ओर से यूके, यूएसए, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में पढ़ने वाले छात्रों के लिए फ्लाई हाई स्कॉलरशिप प्रोग्राम की शुरुआत की गई है। इस स्कॉलरशिप के माध्यम से छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करने और मेंटरशिप का लाभ उठाने का मौका दिया जाएगा। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत छात्रों को अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों के माध्यम से यह दर्शाना होगा कि आपकी योग्यता फ्लाई हाई स्कॉलरशिप के लिए अन्य उम्मीदवारों की तुलना में क्यों बेहतर है? स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत उम्मीदवारों का चयन आवेदकों के विचारों की मौलिकता व संचार कौशल की स्पष्टता आदि के आधार पर किया जाएगा। चयनित छात्रों को 50,00,000 रुपये तक की स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। आवेदकों के पास प्रमाण-पत्र, एडमिशन फीस रसीद व अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए। स्कॉलरशिप के लिए आवेदन ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे।

आवेदन की अंतिम तिथि : 30 जून, 2024
आवेदन लिंक : https://unicreds.com

यूके में पीजी की पढ़ाई करने के लिए स्कॉलरशिप

ब्रिटिश काउंसिल एवं यूके विश्वविद्यालयों के सहयोग से स्नातकोत्तर में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित यानी (एसटीईएम) कोर्स में पढ़ने वाली छात्राओं के लिए ब्रिटिश काउंसिल स्कॉलरशिप-2024 की शुरुआत की गई है। इस स्कॉलरशिप प्रोग्राम का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को सशक्त बनाना और महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कॅरिअर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। स्कॉलरशिप प्रोग्राम में आवेदन करने के लिए छात्राओं के पास स्नातक में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित विषय होने चाहिए। यह स्कॉलरशिप उन छात्राओं को प्रदान की जाएगी, जिन्होंने यूके विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर कोर्स में दाखिला लिया हो। एसटीईएम कोर्स में पढ़ने वाले छात्रों का चयन शैक्षणिक योग्यता, अनुभव या सामुदायिक भागीदारी के आधार पर किया जाएगा। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित छात्राओं को ट्यूशन फीस, स्टाइपेंड, यात्रा खर्च आदि प्रदान किया जाएगा। आवेदकों के पास पिछले वर्ष के प्रमाण-पत्र व अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए। स्कॉलरशिप के लिए आवेदन ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे।
आवेदन की अंतिम तिथि : 30 अप्रैल, 2024
आवेदन लिंक : https://tinyurl.com/58f44yre

आज का दिन

17 मार्च, 1968

भारतीय फिल्म संगीतकार गुलाम मोहम्मद का निधन हुआ था। उन्हें 'मिर्जा गालिब', 'शमा' और 'पाकीजा' जैसी हिंदी की हिट फिल्मों में उनके संगीत के लिए याद किया जाता है।

- **1861 :** ट्यूरिन में इटली साम्राज्य का एकीकरण हुआ था।
- **1912 :** मिस्टर यूनिवर्स का ताज जीतने वाले पहले भारतीय मनोहर एस का जन्म हुआ था।
- **1941 :** अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट द्वारा नेशनल मैलरी ऑफ ऑर्ट का उद्घाटन किया गया था।
- **1969 :** गोल्डा मेयर इस्राइल की पहली महिला प्रधानमंत्री बनी थीं।

व्रत त्योहार

आज : फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी। **कल :** लट्ठमार होली बरसाना, बरसे ब्रज, सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोले।
राहुकाल : प्रात: 07.30 से 09.00 तक।

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2080, 28 फाल्गुन माघ शके 1945, रौद्र मास 05 प्रविष्टे, 07 रज.जान हिजरी 1445, फाल्गुन शुक्ल पक्ष नवमी 22.49 तक उपरांत दशमी, आर्द्रा नक्षत्र 18.10 तक उपरांत पुनर्वसु नक्षत्र, वैधामय योग 16.35 तक उपरांत शोभन योग, बालव करण 10.19 तक उपरांत कौलव करण, चंद्रमा मिथुन राशि में दिन-रात।

सूर्योदय : 06.32
सूर्यास्त : 18.27
(भारतीय मानक समयानुसार)

amarujala.com/astrology

राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

मेष : दिनचर्या अस्त-व्यस्त रहेगी। नए कार्य में निराशा होगी। व्यवसाय में सामान्य लाभ होगा। व्यय भार बढ़ेगा।

वृष : सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। उत्साहन से वृद्धि मिलेगी। स्वास्थ्य लाभ होगा। अटके धन की प्राप्ति होगी।

मिथुन : पारिवारिक समस्याओं में उलझे रहेंगे। सहोदरों से विवाद संभव है। व्यवसाय में लाभ होगा। मन अशांत रहेगा।

कर्क : उत्साह में वृद्धि होगी। शुभ समाचार मिलेगा। शिक्षा में रुचि बढ़ेगी। व्यवसाय में धन लाभ होगा। घर में शांति रहेगी।

सिंह : प्रयासों में अपरोध आएंगे। व्यय की अधिकता रहेगी। व्यावसायिक स्थिति से चिंतित रह सकते हैं।

कन्या : मित्र सहयोग मिलेगा। नई योजना में व्यस्त रहेंगे। अधिक क्रोध में चूकर होगा। लाभ से मन प्रसन्न रहेगा।

तुला : कार्यक्षेत्र में बुद्धिमत्ता का लाभ मिलेगा। नई कार्य योजना बन सकती है। साझेदारी का प्रस्ताव मिलेगा।

वृश्चिक : चली आ रही परेशानी से मुक्ति मिलेगी। जोखिम से बचें मिलेगा। व्यावसायिक लाभ उत्तम रहेगा।

धनु : भ्रू-संपत्ति से अर्थ प्राप्ति होगी। अजनबी से सचेत रहना शुभ रहेगा। धन लाभ होगा। स्वास्थ्य नरम रहेगा।

मकर : अटके कार्यों की पूर्ति होगी। विवाद प्रस्ताव आ सकता है। व्यवसाय में विस्तार से खुशी होगी। आनंद रहेगा।

कुंभ : नए क्षेत्रों में जाल फैलाव बढ़ेगी। विकास का नया मार्ग मिलेगा। व्यवसाय में धन लाभ हो सकता है।

मीन : कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। साझेदारी में मतभेद पनप सकते हैं। प्रयोट लाभ होगा। मन अशांत रहेगा।

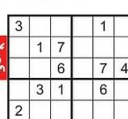

जन्मदिन

साइना नेहवाल, खिलाड़ी

आज जन्मे जातक निरचल, गंभीर और अंतर्मुखी होते हैं। 26वें वर्ष में लक्ष्य प्राप्ति में सफल होते हैं। दांपत्य जीवन प्राय: सुखी नहीं रहता। इस वर्ष योजनाओं में सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। संतान सुख में वृद्धि होगी। समाज में सम्मान बढ़ेगा। आरोग्य सुख उत्तम रहेगा।

सुडोकू

3				1				
	1	7					6	5
		6		7	4			
	3	1		6				2
2								7
7				4		9	1	
			5	8		2		
5	2					7	9	
				2				3

उत्तर

3	9	2	8	1	5	8	7	4
4	1	7	8	9	2	3	6	5
8	5	6	3	7	4	1	2	9
9	3	1	7	6	8	4	5	2
2	8	4	9	5	1	6	3	7
7	6	5	2	4	3	9	1	8
1	7	3	5	8	9	2	4	6
5	2	8	4	3	6	7	9	1
6	4	9	1	2	7	5	8	3

सुडोकू 81 वर्गों का चित्र है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्गों वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

डेली हेल्थ कैप्सूल

ज्यादा सप्लीमेंट लेना ठीक नहीं

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए विटामिन जरूरी है, लेकिन इनका ज्यादा मात्रा में सेवन नुकसानदायक होता है।

शरीर में विटामिन की कमी होने से सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे में कई लोग बिना जानकारी के विटामिन सप्लीमेंट लेना शुरू कर देते हैं। इससे शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। शरीर में विटामिन की कमी या अधिकता होना, दोनों ही स्थितियां

हानिकारक हो सकती हैं, इसलिए शरीर में इनका संतुलन बनाना चाहिए। विटामिन ए, डी, के और ई शरीर में वसा के साथ घुलनशील विटामिन्स का कारण बन सकते हैं, जिससे आलसी, उल्टी, सिर दर्द जैसी समस्याएं हो सकती हैं। विटामिन सी का सेवन सेहत के लिए फायदेमंद है, लेकिन ज्यादा सेवन से पेट से जुड़ी समस्याएं बढ़ सकती हैं। इससे दस्त, पेट में ऐंठन और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल जैसी समस्याएं होती हैं। कैल्शियम हड्डियों के लिए जरूरी है, लेकिन ज्यादा मात्रा किडनी में पथरी बना सकती है। विटामिन बी के ज्यादा सेवन से ऑक्सालेट में बदलाव देखने को मिलता है, जिससे किडनी स्टोन होने का खतरा बढ़ जाता है। विटामिन ए के ज्यादा सेवन से लीवर खराब होने का खतरा बढ़ सकता है। इससे थकान, कमजोरी, भूख न लगना और उल्टी जैसी समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

स्वस्थ शरीर के लिए विटामिन बहुत जरूरी होते हैं। जब भी आपके शरीर में विटामिन की कमी पता चले तो डॉक्टर की सलाह पर ही विटामिन सप्लीमेंट लेना चाहिए। मरीज के खुद ही लेने से नुकसान हो सकता है।
-निलेश जैन, वरिष्ठ चिकित्सक

दैनिक जागरण

स्वार्थ से उत्पन्न होने वाला प्रेम पानी के बुलबुले जैसा होता है

नागरिकता कानून पर दुष्प्रचार

संजय गुप्त

जो सीएए का विरोध कर रहे हैं, उनके पास इस सवाल का जवाब नहीं कि यदि भारत पड़ोसी देशों के अल्पसंख्यकों की चिंता नहीं करेगा तो कौन करेगा?

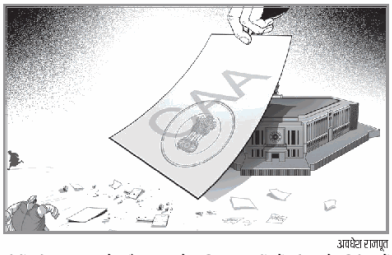

आखेट राजपूत

दिसंबर 2019 में संसद से पारित हुए नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए के नियम तय होते ही उस पर अमल शुरू हो गया है। यह कानून भारत के तीन पड़ोसी देशों पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में उत्पीड़न का शिकार होकर भारत आए इन देशों के अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने के लिए है। इन तीनों देशों के अल्पसंख्यकों को राहत देना एक तरह से विभाजन की त्रासद परिस्थितियों का निवारण करना है। भारत विभाजन के बाद पहले पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न हुआ, फिर उससे अलग होकर बने बांग्लादेश में भी। इसी तरह अफगानिस्तान में इस्लामी कट्टरपंथियों के वर्चस्व के चलते हिंदुओं और सिखों का वहां रहना दूभर हो गया। देश विभाजन के बाद भारत-पाकिस्तान में नेहरू-लियाकत नामक जो समझौता हुआ, उसके तहत यह तय हुआ था कि दोनों देश अपने यहां के अल्पसंख्यकों का ध्यान रखेंगे। पाकिस्तान इस समझौते के पालन के प्रति कभी ईमानदार नहीं रहा। वहां अल्पसंख्यकों का जो उत्पीड़न शुरू हुआ, वह समय के साथ बढ़ता गया और आज भी जारी है।

देश के विभाजन के बाद पाकिस्तान में करीब 24 प्रतिशत हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, ईसाई, पारसी आदि थे। बांग्लादेश बनने के बाद उनकी और विशेष रूप से हिंदुओं की एक बड़ी आबादी वहां की नागरिक बन गई। आज पाकिस्तान में अल्पसंख्यक दो प्रतिशत करीब और बांग्लादेश में आठ प्रतिशत से भी कम बचे हैं। शेष 14 प्रतिशत या तो पलायन के लिए बाध्य हुए या फिर जबरन मतांतरण की मजबूर हुए। जो बचे हैं, वे भी खतरे में हैं। इनमें से तमाम भारत भाग आए, जिनमें अधिकांश अनुसूचित जाति के हैं। वे शरणार्थी के रूप में खराब हालत में रह रहे हैं। इनमें से जो 2014 तक भारत आ चुके हैं, उन्हें ही सीएए के जरिये नागरिकता मिलेगी। सीएए में समय-समय पर संशोधन हुए, लेकिन उसमें इन तीनों देशों में सताए गए अल्पसंख्यकों की सुध नहीं ली गई। आखिरकार 2019 में ऐसा किया गया। ऐसा करके भारत ने अपने नैतिक दायित्व को पूरा किया और इतिहास की भूल को सुधारा। सीएए में संशोधन के विरोध में 2020 में देश में हिंसक प्रदर्शन हुए। दिल्ली में तो शाहीन बाग में महीनों तक सड़क को बंदकर धरना दिया गया। इसके कारण दिल्ली में भीषण दंगे हुए, जिसमें 50 से अधिक लोग मारे गए। सीएए पर अमल की घोषणा होते ही कई दलों ने उसका फिर से वैसा ही विरोध शुरू कर दिया है, जैसा चार साल पहले किया था। इस कानून से असहमति जताने के लिए लोगों को गुमराह करने और बरगलाने वाले हास्यास्पद बयान दिए जा रहे हैं।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल कह रहे हैं कि मोदी सरकार उक्त तीनों देशों के अल्पसंख्यकों को बुलाकर उन्हें नौकरी देगी और उनके लिए घर बनाएगी। उन्होंने यह कहकर लोगों को डराने का भी काम किया कि यदि इन देशों के करोड़ों लोग भारत आ गए तो अपराध बढ़ जाएंगे और कानून एवं व्यवस्था के लिए खतरा पैदा हो जाएगा। वह जानबूझकर इस तथ्य की अनदेखी कर रहे कि सीएए उक्त तीनों देशों के अल्पसंख्यकों को बुलाकर नागरिकता देने का कानून नहीं है। यह तो केवल उनके लिए है, जो 2014 तक भारत आ चुके हैं। बंगाल, तमिलनाडु एवं केरल के मुख्यमंत्री कह रहे हैं कि वे इस कानून को अपने यहां लागू नहीं होने देंगे, जबकि नागरिकता देना केंद्र सरकार का अधिकार है, किसी राज्य सरकार का नहीं। यह ध्यान रहे कि अतीत में बंगाल, केरल, राजस्थान और पंजाब की तत्कालीन सरकारें अपनी विधानसभाओं में सीएए के विरोध में प्रस्ताव पारित कर चुकी हैं।

जो भी नेता सीएए का विरोध कर रहे हैं, उनके पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं कि अगर भारत पड़ोसी देशों के अल्पसंख्यकों की चिंता नहीं करेगा तो कौन करेगा? विभाजन के पहले तो ये भारत के ही वे नागरिक थे, जिन पर पाकिस्तान थोप दिया गया। यह संभव है कि लोकसभा चुनाव के पहले सीएए लागू होने के कारण राजनीतिक रूप से भाजपा को कुछ लाभ मिल सकता है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि इससे आशंकित होकर विपक्षी दल बेतुकी बातें करने लगें और जनता के बीच भ्रम फैलाएं। फिलहाल वे यही कर रहे हैं। वे मुस्लिम समाज में यह भ्रम फैला रहे कि सीएए लागू होने के उपरांत एनआरसी को इस तरह लागू किया जाएगा कि उनकी नागरिकता चली जाएगी। यह निरा झूठ है, क्योंकि अभी तो एनआरसी की कोई बात ही नहीं है और यदि कभी एनआरसी लागू हुआ तो अवैध तरीके से बांग्लादेश से आए मुसलमानों पर असर तो पड़ सकता है, लेकिन किसी को तब तक नहीं निकाला जा सकता, जब तक संबंधित देश उसे लेने को तैयार न हों। एक भ्रम यह भी फैलाया जा रहा है कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश के मुसलमानों को नागरिकता देने के दरवाजे बंद किए जा रहे हैं। यह भी झूठ है, क्योंकि नागरिकता कानून में उनके लिए अलग से नियम है। इस नियम के तहत इन देशों के प्रताड़ित मुस्लिम भारत की नागरिकता पाने का आवेदन कर सकते हैं।

यह विडंबना है कि विपक्षी दल वोट बैंक की राजनीति के चलते अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश से आए मुसलमानों को इन देशों के अल्पसंख्यकों के समकक्ष खड़ा चाह रहे हैं और इसकी अनदेखी कर रहे हैं कि वे धार्मिक प्रताड़ना का शिकार नहीं। विपक्षी दल म्यांमार से आए रोहिंग्या मुसलमानों को लेकर भी मौन हैं, जबकि वे पूर्वोत्तर से घुसपैठ कर जम्मू और हैदराबाद तक जाकर बस गए हैं। भारत सदैव से शरण लेने आए दूसरे देशों के लोगों के प्रति उदार रहा है, लेकिन आज पहले जैसी स्थिति नहीं। अब शरणार्थी के रूप में आतंकी तत्वों के आने का खतरा बढ़ गया है। भारत ऐसी स्थिति में भी नहीं कि जो भी आना चाहे, उसे आने दे और उसे नागरिकता भी दे दे। भारत की आबादी इस समय विश्व में सबसे अधिक हो गई है। यदि भारत में दूसरे देशों के नागरिकों का अवैध आगमन जारी रहा तो स्थिति गंभीर हो सकती है। अन्य देशों की तरह भारत को यह तय करने का अधिकार है कि वह दूसरे देशों के किन लोगों को नागरिकता दे और किन्हें नहीं।

response@jagran.com

सबसे बड़े चुनाव

आम चुनावों की घोषणा के साथ ही दुनिया के सबसे बड़े चुनावों की प्रक्रिया शुरू हो गई। पहले चरण का मतदान 19 अप्रैल को और आखिरी चरण का एक जून को होगा। परिणाम चार जून को आएंगे। यह एक लंबी चुनाव प्रक्रिया है। यह ठीक है कि जिस चुनाव में लगभग 97 करोड़ मतदाताओं को भागीदारी करनी हो, उसमें कुछ तो समय लगेगा ही, लेकिन अच्छा होता कि कहीं कम चरणों में चुनाव संपन्न कराने के प्रयत्न किए जाते। वैसे तो 2019 में भी सात चरणों में मतदान हुआ था और उसके पहले 2014 में नौ चरणों में, लेकिन 2009 में पांच चरणों में ही चुनाव करा लिए गए थे। लंबी चुनावी प्रक्रिया खर्चीली ही नहीं, उबाऊ भी होती है और आचार संहिता के चलते बहुत से सरकारी काम ठप हो जाते हैं। चुनाव लोकतंत्र का अनिवार्य अंग हैं और उन्हें निष्पक्ष तरीके से संपन्न कराने के लिए हरसंभव कदम उठाए जाने चाहिए, लेकिन यह भी ठीक नहीं कि उनके चलते दो माह से अधिक समय तक तमाम सरकारी कामकाज रुके पड़े रहें। जहां निर्वाचन आयोग को भविष्य में कम से कम समय में चुनाव कराने के जतन करने चाहिए, वहीं राजनीतिक दलों को लोकसभा के साथ विधानसभा चुनाव कराने के प्रस्ताव पर उदारता से विचार करना चाहिए। इस बार लोकसभा के साथ ही चार राज्यों ओडिशा, आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। एक साथ चुनाव की पहल का विरोध करने वालों को बताना चाहिए कि यदि लोकसभा के साथ चार राज्यों के विधानसभा चुनाव हो सकते हैं तो अन्य राज्यों के क्यों नहीं हो सकते?

निःसंदेह समय के साथ चुनावों में बाहुबल की भूमिका कम हुई है, लेकिन वह पूरी तौर पर समाप्त नहीं हुई। बंगाल में अभी भी बाहुबल की खतरनाक भूमिका देखने को मिलती है। चुनावों में धनबल की भी भूमिका बढ़ी है। गुपचुप रूप से पैसे और सामग्री बांटकर लोगों के वोट खरीदने की प्रवृत्ति लोकतंत्र के लिए एक बड़ा खतरा है। हैरानी नहीं कि निर्वाचन आयोग इसे भी एक चुनौती के रूप में देख रहा है। इसके अलावा उसके समक्ष एक नई चुनौती फर्जी सूचनाएं भी हैं। यह चुनाव डिजिटल दुनिया में भी लड़ा जाएगा और यह किसी से छिपा नहीं कि इस दुनिया में फर्जी खबरों का कितना बोलबाला है। निर्वाचन आयोग आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन को भी अपने लिए एक चुनौती के रूप में देख रहा है। यह चुनौती है तो इसीलिए, क्योंकि अनेक नेता मर्यादा में रहकर चुनाव लड़ने के लिए तैयार नहीं होते। वास्तव में उन पर तब तक लगाम नहीं लग सकती, जब तक निर्वाचन आयोग को उनके खिलाफ ठोस कार्रवाई करने के लिए पर्याप्त अधिकार नहीं मिलते। चूंकि चुनाव लोकतंत्र का उत्सव होते हैं, इसलिए जनता को राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अधिकाधिक मतदान प्रतिशत सुनिश्चित करना चाहिए। हमारा लोकतंत्र इससे ही सबल होगा।

नकल पर लगे नकेल

प्रश्नपत्र लीक और परीक्षा में नकल समाज में एक अपराध की तरह आम हो गए हैं। सालों से परीक्षा की तैयारी में लगे छात्रों के सपने को तोड़ने के लिए माफिया चंद पैसों की खातिर सक्रिय हैं। झारखंड-बिहार समेत दूसरे राज्य सरकारों ने भी नकल और प्रश्नपत्र की लीक को रोकने के लिए कठोर कानून बना रखे हैं, लेकिन आए दिन इससे जुड़ी खबरें आती रहती हैं। अभी हजारीबाग से ऐसा ही मामला सामने आया है। बिहार लोकसेवा आयोग की परीक्षा में शामिल होने जा रहे छात्रों को ऐसे ही एक गिरोह ने फंसाया था। बिहार पुलिस को सूचना मिली तो पूरा मामला उजागर हुआ। खास बात यह है कि बिहार से लाकर इन छात्रों को हजारीबाग में रखा गया था। झारखंड में हाल ही में जेएसएससी की परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक होने का मामला शांत नहीं हुआ है। पिछले सात सालों से इस परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्र और उनके स्वजन परेशान हैं। माफिया तत्व इतने बेखौफ हैं कि एक निजी गाड़ी पर बिहार सरकार के एक अधिकारी का बोर्ड लगाकर घूमते हैं और पुलिस को इसकी भनक तक नहीं लग पाती है। झारखंड में भी छात्रों को ऐसे तत्वों की करतूत से भुगतना पड़ रहा है। कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाले छात्र समझ नहीं पाते हैं कि इस हालत से कैसे निकला जाए। नौकरी की तलाश में लंबे समय तक तैयारी करने वाले छात्रों को इस समस्या से निकालने के लिए अब केंद्रीय स्तर पर पहल की आवश्यकता है। इस तरह के अपराध को देश के विरुद्ध किया जाने वाले अपराध मानकर दंड विधान तय किया जाना चाहिए। युवाओं के सपने को माफिया तत्वों के हवाले नहीं किया जा सकता है।

कठोर कानून के बाद भी नकल और प्रश्नपत्र लीक पर रोक लगाने में प्रशासन नहीं हो रहा सफल

हर जवाबदेही से मुक्त अंतरात्मा

हास्य-व्यंग्य

एक बड़े मैदान में बड़ा-सा तंबू तना था। लोग कतार लगाए खड़े थे। कुछ बड़ा हो रहा है, यह सोचकर तंबू में घुसने की कोशिश की। पता चला कि कतार में खड़े सभी अंतरात्मा हैं, जो तुरंत जागे हैं। इसी तंबू के नीचे इनकी नींद खुली है। बरसों से ये सेंध हुए थे, नरक भोग रहे थे। अब जाकर इन्हें छप्पन-भोग की उम्मीद दिखाई पड़ी है। अब ये इधर-उधर कहीं नहीं जाएंगे। दोबारा सोने से पहले तक यहीं रहेंगे।

बहरहाल मुझे तंबू वालों का इंतजाम बेहतरीन लगा। वे इन क्षुधित-वंचित आत्माओं को जगाने का काम निःस्वार्थ भाव से करने में संलिप्त थे। इनमें कई अंतरात्मा तीन-चार योनियों में भ्रमण के बाद भी शांति की तलाश में भटक रहे थे। आखिरकार उन्हें इसी तंबू में शरण मिली। कुछ ऐसे भी थे, जिन्हें इस संसारिक मोह से विरक्ति हो गई थी। उन्हें वर्तमान के बजाय भविष्य की और स्वयं के बजाय राष्ट्र की चिंता सताने लगी थी। एक नवोदित अंतरात्मा ने रहस्य खोला कि पिछली रात अचानक उसकी नींद टूटी। उसी क्षण उसके कानों में आसमानी-संदेश मिला कि असली मुक्ति-धाम यहीं पर है। पूरे सम्मान और गारंटी के साथ निष्ठा का सामूहिक ट्रांसफर भी हो जाएगा। उसने स्वयं को नए और उन्नत वर्जन में अपग्रेड कर दिया। काया वही, आत्मा नया। यह नया आत्मांतरण था।

ऐसा ही कुछ मैं सोच रहा था कि मेरी दृष्टि कतार में खड़े एक वरिष्ठ अंतरात्मा पर पड़ी। हमने लपक

संतोष त्रिवेदी

अंतरात्मा के जगने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि पुरानी सारी शपथ अपने आप निरस्त हो जाती हैं

कर उससे सवाल कर दिया, 'आप की नींद टूटी कैसे? कहीं कच्ची नींद में तो नहीं जाग गए?' उसने धीरे से कहा, 'देखिए, अंतरात्मा किसी के प्रति जवाबदेह नहीं। न तो मेरी नींद कच्ची थी और न ही मैं कोई कच्चा काम करता हूं। सोते हुए मुझे सपना आया कि मैंने जिस काया की धारण किया है, उस पर भीषण संकट आने वाला है। अगर जीवात्मा को कष्ट हुआ तो अंतरात्मा स्वयं को कभी माफ नहीं कर सकता। अब आगे जो भी होगा, जीवात्मा करेगा। मैंने उसे पर्याप्त सचेत कर दिया है।'

हमारी यह बातचीत एक अनुभवी अंतरात्मा सुन रहा था। उससे रहा न गया। उसने जरूरी हस्तक्षेप किया, 'आपको जो पूछना है, मुझसे पूछो। मेरे पास लंबा अनुभव है। मैंने आत्म-निर्वत्रण पा लिया है। जब चाहता हूं, जग लेता हूं।' उसका आत्म-विश्वास देखकर मुझे अच्छा लगा। मैंने पूछा, 'आवाज सुनाई देने का कोई निश्चित समय या पैटर्न भी होता है?' उस अनुभवी अंतरात्मा ने बिना अंदर झांके सारा रहस्य खोल दिया, 'उच्च गुणवत्ता वाला अंतरात्मा अमूमन चुनावों से ऐन पहले जागता है। कई बार परिणाम आने के बाद भी जाग लेता है। यह सब अंतरात्मा-धारक की प्रतिभा पर निर्भर है कि वह कुंडलिनी की तरह इसे कब जागृत कर ले। यह हुनर बिरलों के पास ही होता है।' 'पर जागने का सुबूत क्या?' उसने सहजता से उत्तर दिया, 'खास बात है कि जागने से पहले संकेत आने लगते हैं। जितनी जल्दी इस संकेत को जीवात्मा पकड़ लेता है, उसका कल्याण हो जाता है। जो सोए रहते हैं, वे पकड़े जाते हैं। इससे साबित हो जाता है कि उस प्राणी के पास अंतरात्मा है ही नहीं। यह लोकतंत्र की खूबी है कि यहां आत्मा के जागने का सम्मान किया जाता है। एक जागे हुए आत्मा में बड़ी ताकत होती है। वह चलती हुई सरकार गिरा सकता है और गिरती हुई को बचा भी सकता है। खुद भले गड्ढे में गिर जाए, पर लोकतंत्र को अपने कंधे पर लटकाए रखता है।'

'अब एक आखिरी सवाल। जागने से राजनीति और राष्ट्र का भला तो समझ में आता है, पर व्यक्तिगत लाभ भी होता है? मैंने अंतरात्मा को ललकारने की कोशिश की। 'सबसे बड़ा लाभ तो यही कि पुरानी सारी शपथ अपनेआप निरस्त हो जाती हैं। उनका कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता। आत्मा-धारक नई शपथ धारण करते हैं, जिस संविधान और लोकतंत्र को अपमानित करने का आरोप लगता है, नई शपथ लेते ही वह धुल जाता है।' अंतरात्मा ने मुझे निरुत्तर कर दिया।

response@jagran.com

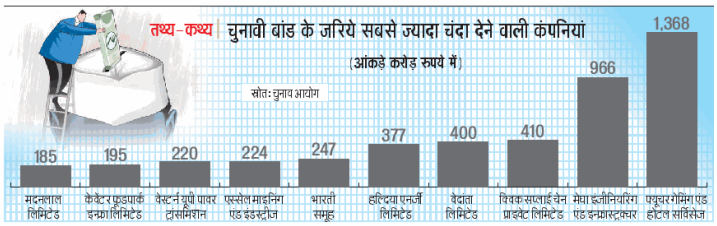

ऊर्जा

संवेदना

संवेदना एक पवित्र भावना है, जो आर्त व्यक्ति के दुख को अनुभव कर अंतर्मन में उत्पन्न होती है तथा सहानुभूति को जन्म देती है। परदुखकातरता इसी का परिणाम है। सच्ची संवेदना के लिए हृदय में दया, करुणा और ममता आदि भावों का होना आवश्यक है। इनके बिना संवेदना का जन्म नहीं होता। इसीलिए करुणा को संवेदना की गंगोत्री कहा जाता है। स्वार्थ और लोभ आदि मानवीय विकार इसके पथ बाधक हैं, जो संवेदना को उपजने नहीं देते।

वस्तुतः संवेदना इंद्रियजन्य है। अंतर्मन को प्रभावित करने वाले विषयों से ज्ञानेंद्रियों का सन्निकर्ष होने पर इसका जन्म स्वतः होता है। इसके लिए मनोवैज्ञानिक अधिगम की तीव्रता होनी चाहिए। संवेदना की तीव्रता इसी से सुनिश्चित होती है। बौद्धिक संचेतना इसके क्षेत्र को विस्तार देती है। मानवता को उपकृत करने वाले सात्विक भावों का उदय इसी से होता है। इसलिए संवेदना मानवता की संरक्षिका है। इसके सभी अंग संवेदना द्वारा ही पल्लवित और पुष्पित होते हैं। परहित का भाव तो संवेदना का सहज परिणाम है, जो सबसे बड़ा धर्म भी है और मानवता का आधार भी।

संवेदना अंतःकरण की मौन प्रक्रिया है, जो बिना कुछ कहे आचरण को प्रभावित करती है। राजनीति, धर्म, अर्थ, विज्ञान, पर्यावरण आदि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जिस पर इसका सकारात्मक प्रभाव न पड़ता हो। सामाजिक एवं आर्थिक समानता के लिए इससे बड़ा कोई समाधान नहीं है। यह सभी वर्गों में प्रेम का आंतरिक संबंध स्थापित कर सामाजिक एकता में वृद्धि करती है। संवेदना पर आधारित रामराज्य इसका उदाहरण है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हृदय में संवेदना का भाव इतना प्रबल था कि नदी में स्नान करती निर्धन एकवस्त्रा नारी ने उन्हें लंगोटी धारण करने पर विवश कर दिया। इसीलिए उनकी इच्छा थी कि जन-जन में संवेदना का भाव प्रबल हो।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

गाय बनेगी इंसुलिन फैक्ट्री

मुकुल व्यास

गायें भी इंसुलिन का उत्पादन कर सकती हैं। आनुवंशिक रूप से संशोधित गायें इंसुलिन फैक्ट्री बन सकती हैं

दुनिया भर में डायबिटीज के लाखों रोगियों के लिए इंसुलिन तक पहुंच एक निरंतर संघर्ष है। इंसुलिन की उपलब्धता बढ़ाने के लिए दुनिया के वैज्ञानिे प्रयोगशालाओं के अलावा दूसरे स्रोतों से भी इंसुलिन प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं। जानकर आश्चर्य होगा कि गायें भी इंसुलिन का उत्पादन कर सकती हैं। आनुवंशिक रूप से संशोधित गायें इंसुलिन फैक्ट्री बन सकती हैं। एक नए अध्ययन के अनुसार आनुवंशिक फेरबदल के बाद गाय ने मानव इंसुलिन युक्त दूध का उत्पादन किया है। इससे सभी डायबिटीज रोगियों के लिए कम लागत पर पर्याप्त इंसुलिन का उत्पादन किया जा सकता है। डायबिटीज रोगियों को इंसुलिन लेनी पड़ती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि दुनिया भर में 15 से 20 करोड़ लोगों को इंसुलिन की आवश्यकता होती है। उनमें से केवल आधे का ही इंसुलिन के साथ इलाज किया जा रहा है। कई निम्न और मध्यम आय वाले देशों और कुछ उच्च आय वाले देशों में इंसुलिन तक पहुंच अपर्याप्त है। इंसुलिन की कमी दूर करने के लिए अमेरिका और ब्राजील के शोधकर्ताओं ने मिलकर गाय आधारित 'बायोफैक्ट्री' का निर्माण किया है। शोधकर्ताओं ने नियमित ब्राजीलियाई गायों के गर्भाशय में प्रत्यारोपित कुछ गाय भ्रूणों की कोशिकाओं में इंसुलिन के प्रारंभिक रूप प्रोइंसुलिन डाला। प्रत्यारोपण के परिणामस्वरूप एक ट्रांसजेनिक बछड़ी का जन्म हुआ। 'ट्रांसजेनिक' शब्द से अभिप्राय एक ऐसे जीव से है जिसमें किसी असंबद्ध जीव से कृत्रिम रूप से लाया गया डीएनए शामिल होता है। ट्रांसजेनिक बछड़ी के दूध में प्रोइंसुलिन का उत्पादन करने की अद्भुत क्षमता है।

उस गाय की स्तन ग्रंथि में प्रोटीन उत्पादन की काबिलियत है। शोधकर्ता इस प्राकृतिक प्रणाली को कुछ ऐसा बनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं जिससे लाखों लोगों को लाभ हो सके। शोधकर्ता अब इस प्रक्रिया को परिष्कृत करने की कोशिश कर रहे हैं। उनका लक्ष्य ऐसे ट्रांसजेनिक बैल बनाने का है, जो इंसुलिन-उत्पादक गुणों को आगे प्रसारित कर सकें ताकि इंसुलिन उत्पादन के लिए गायों का एक समर्पित झुंड तैयार किया जा सके। एक सामान्य डेरी फार्म पूरे देश को आपूर्ति करने के लिए पर्याप्त इंसुलिन का उत्पादन कर सकता है। जटिल मशीनरी और बैक्टीरिया पर निर्भर पारंपरिक तरीकों के विपरीत गाय-आधारित इंसुलिन उत्पादन मौजूदा डेरी बुनियादी ढांचे का लाभ उठा सकता है। हालांकि अभी भी कुछ बाधाएं हैं जिन्हें दूर करना बाकी है। इसके लिए एफडीए का अनुमोदन और एक कुशल शुद्धीकरण प्रणाली का निर्माण आवश्यक है। फिर भी उच्च तकनीक सुविधाओं की तुलना में गाय-आधारित इंसुलिन गेम-चेंजर हो सकती है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

फिल्में

कहा जाता है कि फिल्में समाज का आईना होती हैं। यानी जो समाज में चारों ओर घटित हो रहा होता है उसकी झलक फिल्मों में दिखाई देती है। कई बार पुलिस किसी अपराधी को पकड़ती है तो अपराधी बताता है कि उसे संबंधित अपराध करने का आइडिया तो फलां फिल्म देखकर मिला। हाल में एक जज साहब ने भी स्वीकार किया कि गत दिनों जब वह एक फिल्म देख रहे थे तो उनके दिमाग में उससे संबंधित एक केस घूम रहा था। वास्तव में डोमिनिका से अमेरिका जाते वक्त लापता हुए नीरव मोदी के मामले के संबंध में सुनवाई के वक्त न्यायाधीश ने शहर रुख खान की फिल्म ''डंकी'' का जिक्र किया। हालांकि उस दिन केस की सुनवाई टल गई, लेकिन इसमें अजूबा नहीं कि मामले से संबंधित व्यक्ति अब फिल्म 'डंकी' के हर एक पहलू को गंभीरता से देख रहे होंगे।

पहली नजर में उम्मीदवार

आम चुनाव के लिए उम्मीदवारों की घोषणा तो अब शुरू हुई है, लेकिन कुछ ऐसे उम्मीदवार भी होते हैं जिनके बारे में फैसला वर्षों पहले हो चुका होता है।

राजरंग

केरल की तिरुअनंतपुरम सीट भी कुछ ऐसी ही है, जिस पर उम्मीदवार का फैसला प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लगभग तीन साल पहले कर लिया था। विदेश से पढ़ाई करने वाले टेक्नोक्रेट और स्टाइलिश राजीव चंद्रशेखर को जब पीएम मोदी ने अपने कैबिनेट में स्थान दिया तो साथ ही यह सुझाव भी दे दिया था कि उन्हें अपने राज्य की पारंपरिक वेशभूषा में ज्यादा दिखना चाहिए। राजीव चंद्रशेखर उसके बाद से कभी भी सूट या पैंट शर्ट में नहीं दिखे। वह हमेशा धोती और कुर्ता में ही दिखे। तिरुअनंतपुरम से कांग्रेस के शशि थरूर लंबे समय से सांसद हैं। संभवतः पीएम मोदी ने राजीव चंद्रशेखर में ऐसा व्यक्तित्व देखा, जो स्थानीय लोगों से भी सहजता से कनेक्ट कर सकते हैं और पढ़े-लिखे युवाओं से भी, जिनके जीवन में महत्वाकांक्षा है। पिछले एक सप्ताह से बहुत सामान्य व्यक्ति की तरह वह क्षेत्र के लोगों से मिलते नजर आ रहे हैं। अगर वह पीएम मोदी की अपेक्षा को पूरा करने में कामयाब रहे तो राजनीति के बड़े खिलाड़ियों में उनका भी नाम शुमार हो जाएगा।

मिशन बांड

चुनावी बांड के संबंध में आए आंकड़ों के बाद राजनीतिक दलों में आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला तेज हो गया है। एक-दूसरे को कठघरे में खड़ा करने के लिए नए-नए एंगल ढूंढे जा रहे हैं, लेकिन केवल राजनीतिक दलों की ही नहीं, बल्कि कहा जा रहा है कि चुनावी बांड के जरिये चंदा देने वाले औद्योगिक घरानों के भी दिल इन दिनों तेजी से धड़क रहे हैं। इस सबके बीच कांग्रेस और विपक्ष के रणनीतिकार लेंस लगाकर यह ढूंढ रहे हैं कि अदाणी और अंबानी के फंड कहां गए। जो नाम सामने आए हैं उसमें तो वे मौजूद नहीं हैं। अगर इनके नाम नहीं दिखे तो राहुल गांधी का मिशन अदाणी फेल हो जाएगा।

कैसे होगा काम

अगर अधिकारी को ही पता नहीं कि उसके अधीन कौन-कौन विभाग हैं तो फिर काम कैसे होगा? हाल में एक अधिकारी ने अपने मातहत एजेंसी के बारे में भी अनभिज्ञता जता दी। एजेंसी है नेशनल कोआपरेटिव कंज्यूमर फेडरेशन (एनसीसीएफ)। यह एजेंसी केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के अधीन काम करती है। पिछले कुछ माह से दाल, चावल एवं प्याज जैसी वस्तुओं की सरकारी बिक्री में इस एजेंसी का सहयोग लिया जा रहा है। खाद्य वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सरकार एनसीसीएफ के साथ नेशनल एग्रीकल्चर कोआपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन आफ इंडिया (नेफेड) की मदद ले रही है। बातचीत में जब एक पत्रकार ने अधिकारी से उत्सुकतावश यह पूछ डाला कि एनसीसीएफ के बारे में पहले कभी कोई जानकारी नहीं दी गई तो अधिकारी भी बोल पड़े कि कुछ माह पहले तक तो मुझे भी नहीं पता था कि यह एजेंसी मेरे मातहत काम कर रही है।

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशनलि. के लिए; नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नईदिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाशजिपाही*
दूरभाष : नईदिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

आजकल

विवादों में लेखक और प्रकाशक का संबंध

हिंदी में पुस्तकों का प्रकाशन आम तौर पर लेखक और प्रकाशक के बीच व्यक्तिगत संबंधों के आधार पर अधिक निर्भर करता है। वस्तुतः इन दोनों के बीच के संबंधों के निर्धारण हेतु अभी तक कोई प्रारूप नहीं बन पाया है, लिहाजा कई बार पुस्तक के लोकप्रिय होने की दशा में लेखक-प्रकाशक के बीच रायल्टी को लेकर विवाद भी सामने आए हैं। हाल के दिनों में भी ऐसे कई मामले सामने आए हैं। ऐसे में यह आवश्यक हो गया है कि इस संबंध में एक ठोस व्यवस्था बनाई जानी चाहिए

साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त संजीव के एक वक्तव्य से स्पष्ट होता है कि हिंदी में लेखक-प्रकाशक के बीच अब तक व्यावसायिक संबंध नहीं पनप सके हैं। जागरण

नई दिल्ली के रवीन्द्र भवन परिसर को साहित्य अकादमी ने अपने वार्षिक आयोजन साहित्योत्सव के कारण खूब सजाया था। शनिवार को संपन्न हुए साहित्योत्सव को विश्व का सबसे बड़ा साहित्य उत्सव बताया गया, जिसमें भारतीय और अन्य भाषाओं के 1100 से अधिक लेखकों के भाग लेने की बात कही गई। रवीन्द्र भवन परिसर में बनाए गए अलग अलग सभागारों में दिनभर विमर्श का दौर चला था। इस दौरान परिसर में घूमते हुए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित लेखकों के संक्षिप्त परिचय लोगों का ध्यान आकृष्ट कर रहे थे। पुरस्कार विजेताओं की तस्वीर के साथ पुरस्कृत कृति की तस्वीर भी लगाई गई थी। मेरी नजर वर्ष 2023 में हिंदी के लिए सम्मानित लेखक संजीव के परिचय पर गई। उनकी तस्वीर के साथ सेतु प्रकाशन से प्रकाशित उनकी कृति 'मुझे पहचानो' का कवर भी लगाया गया था। संजीव, जिनका मूल नाम राम सजीवन प्रसाद है, हिंदी के प्रख्यात लेखक और अनुवादक हैं। आपका जन्म छह जुलाई 1947 को बांगर कलां, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। आपकी 17 कृतियां प्रकाशित हैं। 'मुझे पहचानो' हिंदी उपन्यास है, जो सती जैसे सामाजिक कुप्रथा के सामंती अवशेषों के विनाशकारी प्रभावों को उजागर करता है।

संजीव के इस पोस्टर को देखते हुए अचानक से कुछ दिनों पहले दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेला के एक कार्यक्रम की बात दिमाग में कौंधी। इस दौरान राजकमल प्रकाशन के मंच से संजीव ने घोषणा की थी कि उनकी सभी किताबें अब राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित होंगी। अवसर था उनके कहानी संग्रह 'प्रार्थना' के लोकार्पण का। संजीव ने कहा था, 'राजकमल प्रकाशन समूह पहले से हमारा प्रकाशक है और मेरे कई उपन्यास पूर्व में यहां से प्रकाशित हैं। इनसे पुराना संबंध और वर्षों का विश्वास है। इसी कारण राजकमल प्रकाशन को अपनी सभी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अधिकृत किया है।' अब इस अधिकृत करने से जो एक स्थिति बनेगी उसकी कल्पना करिए। सेतु प्रकाशन ने संजीव का उपन्यास प्रकाशित किया। वहां से प्रकाशित उपन्यास पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। सेतु प्रकाशन ने इस उपन्यास को पाठकों और आलोचकों तक पहुंचाने का उपक्रम किया होगा। उपन्यास प्रकाशन पर धन खर्च हुआ होगा जिसे सेतु प्रकाशन ने वहन किया। जब उस उपन्यास को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल गया तो उसे दूसरे प्रकाशन गृह को देने की घोषणा कर दी गई। सेतु प्रकाशन के अमिताभ का कहना है कि अभी तक संजीव ने इस संबंध में उनसे कोई बात नहीं की है। अपने प्रकाशक से बिना बात किए और बिना आपसी सहमति के दूसरे प्रकाशन को पुस्तक देने की घोषणा अनैतिक प्रतीत होती है। यदि राजकमल प्रकाशन समूह से उनका पुराना संबंध और वर्षों का विश्वास था तो उपन्यास वहीं से प्रकाशित करवाना चाहिए था। इससे सेतु प्रकाशन के लिए यह असहज स्थिति नहीं बनती। इसी तरह से संजीव की कई पुस्तकें वाणी प्रकाशन से भी प्रकाशित हैं। उनका क्या होगा, इस बारे में कयास लगाए जा रहे हैं। क्या ऐसी स्थिति बनेगी कि लेखक व प्रकाशकों के मसले अदालत से हल होंगे?

वस्तुतः संजीव हिंदी के ओवररेटेड लेखक हैं। उन्होंने सूत्रधार नाम से एक उपन्यास लिखा था। उनकी विचारधारा के लेखकों ने उसे चर्चित करने का प्रयास किया, परंतु तात्कालिक चर्चा के बाद वह उपन्यासों की भीड़ में गुम हो गया। गाहे बगाहे वे विवादित बयान देते रहते हैं, पर उसका नोटिस भी हिंदी जगत नहीं लेता।

इसके पहले हिंदी प्रकाशन जगत से एक और समाचार आया। स्वर्गीय निर्मल वर्मा की सभी पुस्तकें एक बार फिर से राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित होंगी। निर्मल वर्मा की पत्नी गगन गिल ने प्रकाशन के अधिकार राजकमल को सौंप दिए। राजकमल से उनकी कुछ पुस्तकें नई साज सज्जा के साथ प्रकाशित भी हो गईं। निर्मल जी की पुस्तकों की यात्रा दिलचस्प है। कुछ वर्षों पहले गगन गिल और राजकमल प्रकाशन में रायल्टी को लेकर विवाद हुआ था। तब इस तरह की खबरें आई थीं कि एक वर्ष में निर्मल वर्मा की सभी पुस्तकों की रायल्टी एक लाख रुपये भी नहीं होती है। उस समय हिंदी जगत में रायल्टी को लेकर खूब चर्चा हुई थी। तब निर्मल जी की सभी पुस्तकों के प्रकाशन का अधिकार राजकमल से लेकर भारतीय ज्ञानपीठ को दे दिया गया था। वहां से कुछ वर्षों बाद निर्मल वर्मा की समस्त पुस्तकें वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुईं। संभव है कि एग्रीमेंट ही इस तरह का हो कि एक अंतराल के बाद पुस्तक प्रकाशन का अधिकार लेखक या उनके उत्तराधिकारी के पास वापस आ जाते हों। लेकिन जब विवाद व आरोप-प्रत्यारोप के बाद पुस्तकों के प्रकाशन का अधिकार एक जगह से दूसरे जगह जाता है तब प्रश्न उठते हैं। कुछ दिनों पूर्व विनोद कुमार शुक्ल ने भी रायल्टी का मुद्दा उठाकर अपनी कुछ पुस्तकों के प्रकाशन अधिकार दूसरे प्रकाशन को देने की घोषणा की थी। होना यह चाहिए कि लेखक-प्रकाशक दोनों को प्रकाशन एग्रीमेंट सार्वजनिक करना चाहिए, ताकि भ्रम या विवाद की अप्रिय स्थिति न बने।

संजीव उपाख्य राम सजीवन प्रसाद ने जब अपनी सभी पुस्तकों के राजकमल प्रकाशन से छपने की बात की थी, तब कहा था कि इससे पाठकों को सुविधा होगी और उनको सभी पुस्तकें एक जगह उपलब्ध होंगी। पाठकों को कितनी सुविधा होगी या भ्रमित होंगे यह तो समय तय करेगा, लेकिन लेखकों के आर्थिक लाभ का संकेत तो मिल ही रहा है। हर किसी को अपना लाभ देखना चाहिए, लेकिन उसे दूसरा रंग देना उचित नहीं कहा जा सकता है। पूरे हिंदी जगत को इस पर विचार करना चाहिए कि ऐसी स्थिति बन क्यों रही है। विचार किया जाए तो हिंदी प्रकाशन का जो स्वरूप वर्षों से बना है उसमें प्रकाशक और लेखक के बीच व्यावसायिक संबंध नहीं बन पाते हैं और वे बहुधा व्यक्तिगत होते हैं। वरिष्ठ लेखक अपनी पसंद के प्रकाशकों को अपनी पुस्तकें प्रकाशित होने के लिए दे देते हैं और प्रकाशक लेखक की साहित्यिक हैसियत या अपनी श्रद्धा के अनुसार उन्हें अग्रिम राशि देते हैं जिन्हें रायल्टी में समायोजित किया जाता है। लेखकों को अपनी पुस्तकों के प्रकाशन की इतनी जल्दी होती है कि वे चाहते हैं कि प्रकाशक उनकी पुस्तक उनकी मर्जी की तिथि के अनुसार प्रकाशित कर दे। लेखकों का एक दूसरा वर्ग है जो प्रकाशकों के यहां चक्कर लगाता रहता है कि उसकी कृति किसी तरह से प्रकाशित हो जाए। कई प्रकाशक इस स्थिति का फायदा उठाते हैं और बिना किसी एग्रीमेंट के पुस्तक का प्रकाशन कर देते हैं। जब पुस्तकों की समीक्षा आदि छपने लगती है या कोई पुरस्कार मिल जाता है तो लेखक को लगता है कि प्रकाशक उनकी कृति से बहुत पैसे कमा रहा है। विवाद यहीं से उत्पन्न होने लगता है। ऐसी स्थिति में प्रकाशक कुछ धन लेखक को देकर विवाद को फौरी तौर पर शांत करने का प्रयास करते हैं। हो भी जाता है, लेकिन यह स्थायी हल नहीं है। इस बारे में प्रकाशकों और लेखकों को एक साथ बैठकर बात करनी होगी या फिर हिंदी में अंग्रेजी की तरह लिटरेरी एजेंट हों जो लेखकों और प्रकाशकों दोनों का हित देख सकें। लेखकों और प्रकाशकों को भी दोनों के हितों का ध्यान रखना चाहिए।

खरी खरी

शिकायत जमीन पर अतिक्रमण की

प्रभात गोस्वामी

जमीन पर अतिक्रमण, यह आम बात है। दरअसल खाली जमीन भी सुंदर स्त्री जैसी होती है, जिसे हर कोई ललचाई नजरों से देखता है! थानेवाले भी रपट लिखने से पहले देखते हैं कि जमीन सिंचित है या बंजर? कई बार मौके की जमीन में हिस्से पर सहमति बन जाने पर तीव्र गति से कार्रवाई में जुट जाते हैं। परंतु इस बार मामला थोड़ा हाई प्रोफाइल था। सामने से शिकायत दर्ज करवाने वाला स्थानीय कद्दावर नेता था, जिसे अपुष्ट खबरों से मिली जानकारी के अनुसार कोई उनकी जमीन पर अतिक्रमण करने की तैयारी कर रहा है। इस अपुष्ट खबर ने ही हृष्टपुष्ट नेताजी का वजन कम कर दिया था।

थानेदार चिपकूराम अपनी जड़ें उखड़ने के डर से रपट लिखने और जांच करने के लिए सहर्ष राजी हो गया। दोनों तरफ कुर्सी से चिपके रहने का सुख पाने वाले एक-दूजे की मदद नहीं करेंगे तो किसकी करेंगे? वह नेताजी के बंगले पर पहुंचा। उनके सामने हांजी-हांजी करता हुआ विश्वास दिला रहा था कि अब अतिक्रमणकारी की खैर नहीं। उसने डरते हुए नेताजी से पूछा, 'सर जी, (मन ही मन कहा- यहां तो जहां पत्थर फेको इनकी ही जमीन मिलती है) अन्यथा न लें तो क्या पूछ सकता हूं कि कौन-सी जमीन पर अतिक्रमण की आशंका है?'

नेताजी बिफर पड़े, 'अबे, तुम काहे इधर-उधर डोलते रहते हो? इतना भी पता नहीं कर सकते? जाओ और खोजबीन शुरू करवाओ, नहीं तो हम तुम्हारी सीट के लिए नई खोज शुरू करवाते हैं।'

थानेदार डर गया। उसे भी तो सीट के साथ अपनी जमीनों की चिंता थी! फिर क्या? थाने का सारा अमला लगा दिया गया इस काम के लिए। जमीनों के पास से गुजरने वाले हर आदमी से पूछताछ की जाने लगी। कुछ बाहुबलियों के यहां दबिश देकर यह पता लगाने के प्रयास किए जा रहे थे कि आखिर इस क्षेत्र में नेताजी की जमीन पर अतिक्रमण करने की हिमाकत कौन कर सकता है?

वहीं उधर नेताजी ने अपनी सारी जमीनों की तारबंदी करवानी शुरू कर दी। उप-चुनाव की संभावित घोषणा के अंदेशे से अपने लठैतों को वहां तैनात कर दिया। उनका सारा दिन और रात इसी चौकसी में लग गया। क्षेत्र में उनके कार्यकर्ताओं ने हर तरफ कड़ी नजरें टिका दी थीं। इस चिंता में नेताजी अपने राजनीतिक कार्यों से नजरें हटा चुके थे। शाम को टीवी पर अचानक उप-चुनाव की ब्रेकिंग न्यूज आई। नेताजी बहुत ही खुश हुए। आंखों में जीत के सपने तैरने लगे। अबकी बार उनको टिकट मिलने की पूरी उम्मीद थी। आलाकमान ने भी इशारा कर दिया था। नेताजी भी अपने क्षेत्र में जनसेवा कार्यों में कई वर्षों से लगे हुए थे। पार्टी को उनका संज्ञान लेना ही पड़ेगा।

अगली सुबह थानेदार चिपकूराम रुआंसा होते हुए नेताजी के सामने हाजिर हुआ। उसे देखकर नेताजी ने कहा, 'रोते हुए आए हो, क्या किसी के मरने की खबर लाए हो? कहीं दिखा अतिक्रमण?' चिपकूराम ने बताया, 'सर, हमने तो सारे रास्तों पर नाकाबंदी की हुई है। मच्छर भी नहीं घुस पाया, लेकिन बुरी खबर कि कोई बाहुबली आसमान से पैराशूट से उतरा है और उसी ने आपकी जमीन पर अतिक्रमण कर लिया है।'

यह सुनकर नेताजी के पैरों तले जमीन खिसक गई। उनको काटो तो खून नहीं। आलाकमान ने राज्य के दूसरे छोर से किसी चहेते नेता को यहां से पार्टी का टिकट दे दिया है। कुछ ही देर में पार्टी कार्यालय से संदेश भी आ गया, क्षेत्र में नए नेताजी के लिए जमीन तैयार करनी है। नेताजी गहरे अवसाद में चले गए। वर्षों की मेहनत से राजनीति के मैदान में जो जमीन तैयार की थी, आज उस पर पार्टी ने ही अतिक्रमण करवा दिया। (लेखक व्यंग्यकार हैं)

पोस्ट

आज के भारत में भी इतनी लंबी चुनाव प्रक्रिया देखकर बेहद निराश हूं। अप्रैल, मई और जून, तीन महीने के बजाय इसे अप्रैल में ही संपन्न कराना चाहिए था। यह एक ऐतिहासिक अवसर हो सकता था।
सुहेल सेठ@Suhelseth

नकली दवाइयों की भरमार चिंता का विषय है। हाल के दिनों में नकली दवाओं की जब्ती के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। नकली दवाइयों से मुकाबला करने में केमिस्ट को आगे आना चाहिए। अगर किसी दवाई में मुनाफा बहुत ज्यादा मिल रहा है तो उसमें जरूर गड़बड़ी है। केमिस्टों को सतर्क होकर इसकी सूचना देनी चाहिए।
अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

कितना अजीब है, दूसरों की मदद करने का समय किसी के पास नहीं है, पर दूसरे के काम में अड़ंगा डालने का समय सबके पास है। अरुण गोविल@arungovil12

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का यह कहना कि चुनावी चंदे के लिए लाई गई इलेक्टोरल बांड योजना सही नहीं थी, लेकिन पहले से बेहतर थी, एकदम सही है। तब यह सिर्फ काला धन होता था, पर अब दावे के साथ ऐसा नहीं कह सकते।
तवलीन सिंह@tavleen_singh

मनोहर लाल ने अपनी सारी प्रापर्टी प्रधानमंत्री राहत कोष में दान कर दी और अपना घर भी लाइब्रेरी के लिए दान कर दिया। आज भी राजनीति में ऐसे नेता हैं।
शैलेश सिंह परिहार@PShaileshsingh

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या चुनावी बांड के रूप में विपक्ष को एक बड़ा मुद्दा हाथ लग गया है?

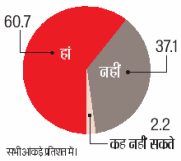

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल
क्या आम चुनाव की प्रक्रिया ज्यादा लंबी है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

धक्का घर में ही लगा यह चिंता की बात,
कौन कर रहा है भला ममता दी से घात।
ममता दी से घात कौन भाई-भौजाई,
बेचारी पर आज मुसीबत कैसे आई??
होनी चहिए जांच तभी चल पाए पक्का,
देने वाला कौन उन्हें घर में ही धक्का!
- ओमप्रकाश तिवारी

रचनाकर्म

बिहार की उलझी हुई पहेली

ब्रजबिहारी

लेखक के भोगे हुए यथार्थ से उद्भूत यह पुस्तक वास्तव में यह पहेली सुलझाने का प्रयास करती है कि समृद्ध और गौरवशाली अतीत वाला बिहार प्रदेश कालांतर में गरीब और पिछड़ा कैसे होता चला गया

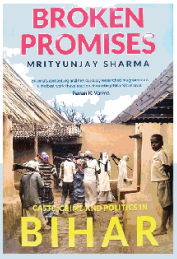

पुस्तक : ब्रोकेन प्रामिसेस : कास्ट, क्राइम एंड पालिटिक्स इन बिहार
लेखक : मृत्युंजय शर्मा
प्रकाशक : वेस्टलैंड बुक्स
मूल्य : 699 रुपये

स्वतंत्रता के समय विभिन्न मानकों के आधार पर देश के शीर्ष राज्यों में शामिल बिहार कैसे हर मोर्चे पर इतना पिछड़ता गया कि यह एक राज्य का नाम संज्ञा न होकर विशेषण बन गया। गरीबी के दंश से बचने के लिए दिल्ली आने वाले मजदूर भले ही किसी भी राज्य के हों, उन्हें बिहारी बोल दिया जाता है। उसी राज्य से आइआइटी और आइएएस जैसी प्रतिष्ठित परीक्षाओं में शीर्ष पर रहने वाले विद्यार्थी भी निकलते हैं। यदि आप भी समृद्ध इतिहास और विरासत वाले इस राज्य की यह पहेली समझना चाहते हैं तो आपको मृत्युंजय शर्मा की पुस्तक 'ब्रोकेन प्रामिसेसः कास्ट, क्राइम एंड पालिटिक्स इन बिहार' से मदद मिल सकती है। वैसे इस विषय पर पुस्तकों की कमी नहीं है। मशहूर समाज विज्ञानी एवं पत्रकार अरविंद एन. दास की पुस्तक 'द रिपब्लिक आफ बिहार' को इस राज्य के गौरवशाली अतीत, निराशाजनक वर्तमान और महान भविष्य की संभावनाओं पर लिखी गई सबसे महत्वपूर्ण कृतियों में शामिल किया जाता है।

मृत्युंजय शर्मा की आलोच्य पुस्तक का मुख्य फोकस लालू प्रसाद के कुशासन और उसकी तुलना में नीतीश कुमार के सुशासन के अंतर को पाठकों तक पहुंचाना प्रतीत होता है और इसमें वे काफी हद तक सफल भी रहे हैं। पुस्तक हमें बताती है कि बिहार ही नहीं, पूरे देश में सामाजिक न्याय के चैंपियन के रूप में 1990 में मुख्यमंत्री बने लालू प्रसाद कैसे और क्यों भ्रष्टाचार और परिवारवाद के प्रतीक बन गए। कभी 'विकास नहीं सम्मान चाहिए' का नारा बुलंद करने वाले पिछड़ों के इस सर्वमान्य नेता की वर्तमान छवि अत्यंत दुखदायी है। वे अब अपने पुराने रूप और संभावनाओं के ठीक विपरीत अपने कुटुंब की रक्षा करते हुए नजर आ रहे हैं।

लालू प्रसाद की ही तरह नीतीश कुमार भी जेपी आंदोलन की उपज हैं, लेकिन दोनों के बीच समानता यहीं समाप्त हो जाती है। लालू अगंभीर हैं, पढ़ने-लिखने में उनका विश्वास नहीं है, लेकिन नीतीश कुमार गंभीर और दृढ़ निश्चयी हैं। अपने एजेंडे और उस पर आधारित निर्णयों पर अटल रहने के कई उदाहरण हैं। सबसे चर्चित है 2010 में पटना में भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के दौरान नीतीश द्वारा भाजपा नेताओं को दिए गए भोज को निरस्त करना। कारण बना एक विज्ञापन, जिसमें गुजरात के तत्कालीन सीएम नरेन्द्र मोदी की तस्वीर छपी थी और बिहार के बाढ़ पीड़ितों को उनके द्वारा पांच करोड़ रुपये दिए जाने पर उनका धन्यवाद ज्ञापित किया गया था। नीतीश की आपत्ति थी कि उन्हें बताए बिना यह विज्ञापन क्यों प्रकाशित करवाया गया।

पुस्तक में दिए ब्योरों से पाठक भले ही पहले से परिचित हों, लेकिन उन्हें पढ़ने के दौरान उन्हें प्रतीत होगा कि जातीय राजनीति के गढ़ बिहार और उसके नेताओं के बारे में उसकी समझ बढ़ी है। मजबूत जातिगत आधार और उससे जुड़े वोटों के बावजूद लालू प्रसाद और उनकी पार्टी अकेले दम पर बिहार में सरकार नहीं बना पा रही है तो इसकी वजह है उनसे जुड़ी जंगल राज की भयावह तस्वीर। नीतीश कुमार बार-बार पलटने के बावजूद राज्य की राजनीति के लिए अपरिहार्य बने हुए हैं तो इसका कारण है उनकी सुशासन की छवि। दिल्ली में बैठकर यह समझ में नहीं आएगा कि कैसे महिलाओं को पंचायत चुनाव में 50 प्रतिशत आरक्षण देकर और लड़कियों को साइकिल बांटकर उन्होंने अपने लिए एक ऐसा वोट बैंक तैयार किया है, जो राज्य की तस्वीर बदल रहा है। बहरहाल, इस पुस्तक को पढ़ने के बाद भी इस पहेली का हल नहीं मिलता कि सड़क, बिजली और कानून व्यवस्था में सुधार के बावजूद बिहार में उस स्तर का निवेश क्यों नहीं हो रहा है, जिसके दम पर वह देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हो सके।

इस पुस्तक की सबसे विशेष बात यह है कि यह लेखक के भोगे हुए यथार्थ से पैदा हुई है। यही वजह है कि पुस्तक की भाषा सहज, सरल और प्रवाहमयी है।

वैश्विक स्तर पर मोदी की दृष्टि

मुकेश चौरसिया

पुस्तक : वसुधैव कुटुम्बकम्
संपादक : डा. अनिल अग्रवाल
प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन
मूल्य : 500 रुपये

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वैश्विक स्तर पर भारत की धमक बढ़ रही है। वह विदेश नीति के क्षेत्र में विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता के रूप में उभरे हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और वैश्विक राजनीति में अमिट छाप छोड़ी है। वैश्विक मंचों पर उनके भाषण मात्र शब्दों तक सीमित नहीं रहे हैं, वे देश की विदेश नीति, कूटनीति और दुनिया के साथ रणनीतिक जुड़ाव के शक्तिशाली साधन बन गए हैं। यह पुस्तक 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रधानमंत्री के चुनिंदा संबोधनों का संग्रह है। यह दुनिया में भारत की भूमिका के लिए मोदी के दृष्टिकोण, उनके कुशल कूटनीतिक प्रयासों, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की बढ़ती स्वीकार्यता और उन्हें प्राप्त कई प्रशंसाओं एवं सम्मानों के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

प्राचीन वैदिक वाक्यांश 'वसुधैव कुटुम्बकम्', जिसका अर्थ है 'दुनिया एक परिवार है', को पुस्तक में चरितार्थ किया गया है। पीएम मोदी ने वैश्विक मामलों के प्रति अपने दृष्टिकोण में इस दर्शन को शामिल किया है और यह उनके नेतृत्व की एक विशेषता बन गई है। यह पुस्तक प्रधानमंत्री की विदेश नीति की दृष्टि से परिचित कराती है, जिसने भारत को विश्व मंच पर पुनः स्थापित किया है। वर्ष 2014 में पदभार संभालने के बाद से उन्होंने स्पष्ट और दृढ़ उद्देश्य के साथ नेताओं, देशों और अंतरराष्ट्रीय मंचों से जुड़ते हुए दुनिया के सभी कोनों में कई राजनयिक यात्राएं की हैं। मोदी ने ऐसे कई उन देशों की भी यात्राएं की हैं, जहां कोई भारतीय प्रधानमंत्री नहीं गया था। पुस्तक यह बताती है कि प्रधानमंत्री के भाषण विदेश नीति के लिए मार्गदर्शक के रूप में काम करते हैं। ये शांति, सहयोग और पारस्परिक सम्मान के सिद्धांत के प्रति गहराई से प्रतिबद्ध रहते हुए भारत के हितों से प्रेरित होते हैं। पुस्तक में उनके प्रमुख संबोधनों को प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक प्रधानमंत्री के बारे में रुचि रखने वालों के लिए उपयोगी हो सकती है।

यतीन्द्र मिश्र

सब जग फूंक के होरी खेलिहौं

रेख्ता की सूफीनामा शृंखला के तहत सूफी कवियों के कलामों का यह एक ऐसा संचयन है, जिसमें साहित्यिक विवेक द्वारा इस तरह की परंपराओं का रेखांकन और संयोजन किया गया है

पुस्तक : जोगिया रंग की बहार : शाह तुराब अली कलंदर
संपादक : सुमन मिश्र
प्रकाशक : रेख्ता पब्लिकेशंस, नोएडा
मूल्य : 299 रुपये

भारत में सूफी भक्ति परंपरा के आदर्श उदाहरण यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। एक तरह से कहा जा सकता है कि सूफी दरवेशों, निर्गुण और भक्त संतों ने भारतीयता को अपनी कलम से समृद्ध करते हुए एक ऐसा बहुरंगी वातावरण बनाया है, जिससे हिंदुस्तान की साझा संस्कृति को बड़े साहित्यिक परिसर में प्रामाणिकता सुलभ हुई। सूफी कवियों और संत वाणियों ने पिछली लगभग कई शताब्दियों में भक्ति काव्य को नए प्रतिमान सुलभ कराए, जिसमें जाति, वर्ण, लिंग, भाषा और संप्रदाय जैसी छोटी सीमाएं मिटकर एक ऐसे बड़े आकाश में समृद्ध हुईं, जिसमें कविता का फलक उर्वर होता गया।

यह देखना सुखद है कि वर्तमान समय में भी कुछ लोगों ने अपने सुचिंतित संपादन और साहित्यिक विवेक द्वारा ऐसी परंपराओं का लगातार रेखांकन, संयोजन और दस्तावेजीकरण किया है। रेख्ता की सूफीनामा शृंखला के तहत सुमन मिश्र के संपादन में सूफी कवियों के कलामों का संचयन ऐसी ही समृद्ध करने वाली थाती है। शाह तुराब अली कलंदर का संग्रह 'जोगिया रंग की बहार' एक उपलब्धि के तौर पर देखा जा सकता है, जिसमें शाह तुराब अली कलंदर के उर्दू दीवान से चयनित कलामों को देवनागरी लिपि में उर्दू में रखते हुए, ठीक उसके सामने हिंदी अनुवाद दिया गया है। इस संचयन की एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि उनके द्वारा लिखी गई कविताओं, गीतों, नात, फारसी कलाम और पदावलियों को एक सांकेतिक रूपाकार देते हुए समावेशी ढंग से संभव किया गया है, जिसमें उनकी बानियों का अभिप्राय खोलने वाली प्रस्तावना बार-बार पढ़े जाने योग्य है। इस संचयन को जिन खंडों में विभक्त किया गया है, उसमें उनके कलाम, नात, गीत, अशआर के अलावा होली, वसंत के पदों समेत कुछ राग आधारित पद भी सम्मिलित हैं।

शाह तुराब अली कलंदर भारत की सरजमीं में 1767 ईस्वी में लखनऊ के पास काकोरी में पैदा हुए थे, उनके पिता हजरत शाह काजिम कलंदर एक महान सूफी हुए हैं, जिनकी भगवान श्रीकृष्ण पर लिखी कई ठुमरियां 'शांत रस' के नाम से प्रकाशित हैं। उन्हीं की परंपरा में गंगा-जमुनी तहजीब को चरितार्थ करते हुए इनके कलाम कृष्ण प्रेम और आराधना की ओर झुके हुए हैं। शाह तुराब अली कलंदर को पढ़ते हुए इस परंपरा में रसखान, ताज और शेख जैसे भक्त कवियों और नजीर अकबराबादी जैसे शायर की सुध आती है। भारतीय कविता की इस महान परंपरा को देखते हुए इस बात पर हैरानी होती है कि हमारे सामाजिक जीवन और संस्कृति में रचे-बसे पौराणिक नायकों एवं चरित्रों से संबंधित जितने धार्मिक और सांस्कृतिक आख्यान प्रचलित हैं, उन पर बिना किसी धर्म का रंग डाले इन सभी ने मुक्त कंठ से सराहना और वंदना में पद और भक्ति गीत लिखे। एक ऐसा समानांतर संसार रचने की कोशिश की, जिसमें भक्ति और शरणागति के तहत ईश्वर के प्रति इबादत, दरअसल अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति को बरतने की मिसाल बन गई। इन कविताओं, गीतों, कलामों, नज्मों, बंदिशों, पदावलियों का यह असर हुआ कि मध्यकाल से लेकर आज तक इन्हें विभिन्न प्रदर्शनकारी कलाओं ने अंगीकार करते हुए अपनी विधाओं में प्रतिष्ठित कर दिया। इसके चलते एक फकीर या जोगी की नज्म हो या किसी भक्त कवि की पदावली, उसे भारतीय शास्त्रीय कलाओं में वह अग्रगण्य स्थान मिल सका, जिसके चलते शास्त्रीय गायन, नृत्य और पारंपरिक नाट्य कलाओं के साथ लोक में व्याप्त गायन परंपरा में भी उन्हें बसा लिया गया। किसी सूफी का लिखा पद, होली या वसंत के अवसर पर घरानेदार गायिकी का पर्याय बन गई, तो कुछ अन्य बंदिशों ने कथक, भरतनाट्यम या अन्य रूपंकर निर्मितियों में जाकर आश्रय लिया। शायद इसी कारण मध्यकाल की कविता और सूफी दरवेशों के कलाम सदाबहार ढंग से जन-जन में स्वीकृत होकर सुलभ हो गए।

'जोगिया रंग की बहार' की यही प्रासंगिकता है कि उसमें संकलित गीत और अन्य कलाम हमारी परंपरा का अविभाज्य अंग बनकर पारंपरिक कलाओं में रच-बस गए हैं। तुराब अली का कृष्ण उलाहना का पद देखने लायक है- 'जारो न फूंको जियरवा मोरा/ रो रो मैं गंगा पार बहूंगी।' श्रीकृष्ण के प्रति आस्था और होली का पद भी पढ़ने लायक है- 'हां हां मो-का न छेड़ कन्हैया, हौं तो दिनन की थोड़ी/ ...रंग सो बोरे जो मोरी चुनरिया, खेलूं 'तुराब' वही संग होरी।' बसंत के पद में भी कृष्ण के प्रति श्रद्धा का चित्रण देखिए- 'अबही सो बृज में धूम मची है/ होरी खेलत है श्याम बिहारी।' गीतों की बड़ी सूची में से कुछ गीतों का केवल मुखड़ा देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनकी भक्ति और प्रेम का रंग कैसा था- 'आओ पियरवा हमरे मंदिरवा', 'कान्ह कुंवर के कारन राधा', 'मोरी बिथा सुन कान्ह कहत हौं', 'कान्ह सों रो रो कहत है राधा' तथा 'पिया आओ बसाओ नगरिया हमरी...।' संपादक सुमन मिश्र ने यह ठीक ही लक्ष्य किया है कि 'तुराब अली के यहां भक्त और भगवान का जो रिश्ता जायसी की 'कन्हावत' से शुरू हुआ था, वह और भी ज्यादा परिपक्व और आत्मीय बन जाता है।' एक अलक्षित रहे सूफी दरवेश पर प्रकाश डालने वाला बेहतरीन संयोजन।

****